प्रेमचन्द एक विवेचन एक विचार

- डॉ. अभिलाषा शुक्ला

शोधसार - प्रेमचन्द का युग वह युग था, जब देश में अंग्रेजी शासन हट हो चुका था। अंग्रेजो के आगमन के पूर्व भारतीय समाज का ढांचा गांवो की इकाई पर स्थित था, जो सारे देश भर में फैले हुए थे और जिनके बीच-बीच में कही-कही कोई नगर मिल जाते थे। भारतीय आर्थिक व्यवस्था कृषि निर्भर थी, इसलिए गांवो की संख्या गणनातीत थी। शहर या तो राजनैतिक महत्व के कारण थे या धार्मिक अथवा व्यवसायिक। भारतीय ग्राम व्यवस्था के साथ सामन्ती सभ्यता का अन्त हुआ और पूंजीवाद साम्राज्यवाद की छत्रछाया में विकसित हुआ। पूंजीवाद को प्रेमचंद ने 'महाजनी सभ्यता' की संज्ञा दी है।

महाजनी सभ्यता का जो विश्लेषण प्रेमचंद ने किया है वह साम्यवादी लगता है, लेकिन प्रेमचंद की पकड़ बौद्धिक नही भावात्मक है। मराठी के साहित्यकार टी.टिकेकर से एक मुलाकात में प्रेमचंद ने कहा था, मैं कम्युनिष्ठ हूँ। किन्तु मेरा कम्यूनिजय केवल यही है कि हमारे देश में जमींदार, सेठ आदि जो कृषको के शोषक हैं, न रहें"। उसी प्रकार साम्यवादी व्यवस्था लाने के लिए प्रेमचंद ने अपने लिखने का उद्देश्य समाज सेवा बताते हुए कहा है "हाँ मैंने समाज के भिन्न-भिन्न मानचित्रों को आदर्श-यथार्थ रूप में रखा है। मैं महात्मा जी के 'चेंज ऑफ हार्ट' के सिद्धांत में विश्वास रखता हूँ। इसलिये जमींदारी मिटेगी, यह मानता हूँ।

गांधी जी के राजनीतिक रंगमंच पर आने पर, प्रेमचंद के जीवन का नया अध्याय प्रारंभ हुआ। प्रेमचन्द का मन इस नये अध्याय के लिये तैयार हो चुका था। प्रेमाश्रय लिखा जा रहा था और गांधी जी के प्रभाव में प्रेमचन्द ने अपनी पन्द्रह बीस साल की जमा नौकरी से इस्तीफा दे दिया था। इस्तीफा में प्रेमचंद ने क्या लिखा था इस्तीफा देते समय उनकी मानसिकता क्या रही होगी, इसका अनुमान हंसराज रहबर ने उनकी एक कहानी 'लाल फीता' से लगाया। यह कहानी प्रेमचंद ने अपने इस्तीफा देने के जमाने में लिखी थी व 'जमाना' के जुलाई 1921 के अंक में छपी थी।

प्रेमचंद के उपन्यास - 'वरदान' (1904) में प्रेमचंद की प्रारंभिक रचना है कालक्रम की दृष्टि से यह 'प्रेमा' या 'प्रतिज्ञा' के बाद का उपन्यास है। अतएव, प्रेमचंद के उपन्यासों के विकास अध्ययन की दृष्टि से 'वरदान' को प्रतिज्ञा के पहले रखना उचित समझा गया है। प्रेमचंद का प्रथम विशिष्ट उपन्यास 'सेवासदन' (1914) है। कला और कृतित्व की दृष्टि से इसका महत्व सर्वमान्य है। 'वरदान' और 'प्रतिज्ञा' की भॉति ही सेवासदन मध्यवर्गीय जीवन और समस्याओं पर दृष्टिपात करता हूँ। यह भी उद्देश्यनिष्ठ उपन्यास है। इसके पात्र भी उद्देश्य के अधीन है। पर चरित्र विकास में परिस्थितियों का व्यापक प्रभाव दिखाकर, उपन्यासकार ने चरित्र-सृष्टि का कलात्मक निर्वाह किया है। 'प्रेमाश्रम' (1918) प्रेमचन्द की उपन्यास कला की प्रगति का सूचक है। इस उपन्यास में नगर के मध्यवर्ग की समस्याओं से आगे बढ़कर ग्राम जीवन और उसकी समस्याओं का चित्रण किया गया है। 'निर्मला' (1923) का प्रेमचन्द ने लघु उपन्यासों में उल्लेख है। यह मध्यवर्गीय समाज और उसकी समस्याओं का चित्रण करता है। इसमें दहेज और अनमेल विवाह के प्रश्नो पर दृष्टिपात किया गया है। 'निर्मला' में बड़े कौशल से मुख्य घटनाओं को निर्मला के चरित्र के आसपास संजोया है और उसके जीवन के विषय-व्यथा में प्रभावित दिखाया गया है। 'रंगभूमि' (1924)

* सहायक प्राध्यापक, (हिन्दी विभाग) संत अलॉयसियस (स्वशासी) महाविद्यालय, जबलपुर

प्रेमचन्द का सबसे वृहद उपन्यास है। इसमें हिन्दु, मुसलमान और उस समाज के जीवन चित्र प्रस्तुत किये गये है। 'रंगभूमि' में भारतीय जीवन के अनेक चरित्रों पर दृष्टिपात किया गया है। 'रंगभूमि' में भारतीय समाज के सभी वर्गों के प्रतिनिधित्व करने वाले पात्र आए है। वर्ग की दृष्टि से इसमें उच्च, मध्य और निम्न वर्ग के पात्र आए है। धर्म की दृष्टि से हिन्दु और मुसलमानों के अतिरिक्त ईसाई पात्र भी संयोजित किए गए है। उपन्यास के प्रधान-चरित्रों के अतिरिक्त सामान्य पात्रों को संजीवता प्रदान करने की कला में प्रेमचंद की उपन्यास कला का सुन्दर विकास हुआ है। यह प्रेमचंद की पहली औपन्यासिक कृति है, जिसमें सामाजिक समस्याओं की अपेक्षा व्यक्ति की समस्या प्रमुख है। रमानाथ का मित्या प्रदर्शन और जालपा का आयोजन प्रेम उपन्यास की कथा के संविधान का विशेष आधार है। व्यक्ति के संस्कार निर्माण में वातावरण का अमिट प्रभाव दिखाकर उपन्यासकार ने चिरसत्य की प्रतिष्ठा की है। 'गबन' की पात्रदृष्टि कलात्मक है। इसमें आदर्शवादी पात्रों की निर्वाव चरित्रों के विपरीत यथार्थवादी पात्रों के सजीव चरित्रों की योजना की गई है। इसके पात्र हमारे जीवन में अधिकाधिक संबंधित है और उनके चरित्र निर्माण में वातावरण एवं परिस्थितियों का व्यापक प्रभाव अंकित किया गया है।

'कर्मभूमि' (1932) में प्रेमचंद ने बड़े व्यापकतत्व के साथ उन राजनीतिक, आर्थिक, समाजिक और धार्मिक प्रवृत्तियों का चित्रण किया है जो पग-पग पर भारतीय समाज और जीवन को प्रभावित कर रही थी। कर्मभूमि में पुरुषपात्रों की अपेक्षा स्त्रीपात्रों का चरित्रांकत अधिक प्रभावात्मक है। कर्मक्षेत्र में भी नारी पात्र पुरूष पात्रों में बाजी मार ले जाते है। सुखदा के अतिरिक्त पठानिन सलोनी नैना, रेणुका आदि स्त्रीपात्रों का चरित्राकंन सजीव हुआ है।

'गोदान' (1936) प्रेमचंद का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। इससे भारतीय समाज के बहुत बड़े भाग को कथावस्तु का विषय बनाया गया है। उपन्यास का ध्येय ग्रामीण समाज का चित्रण करना है। यह पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव में आन्दोलित नागरिक संस्कृति दशा से भी पाठक का परिचय कराती है। 'गोदान' में उच्च, मध्य और निम्न वर्ग के पात्र आये है। उच्च वर्ग में खन्ना जैसे पूँजीपति और रायसाहब जैसे जमींदार हैं, मध्यवर्ग में मेहता मालती और ओंकारनाथ आदि है। निम्नवर्ग में होरी, ग्रोबर, सिलिया, शोभा हीरा भूरे आदि व्यक्ति आते है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से 'गोदान' के पात्रों के दो स्पष्ट वर्ग है शोषक - शोषित। प्रथमवर्ग जमीदार पूंजीपति और महाजन हैं। शोषित वर्ग में गांव के किसान और नगर के श्रमजीवी हैं। इन पात्रों की चरित्रत प्रवृत्तियों के अतिरिक्त इनके मानसिक गठन की अच्छी झाँकी भी मिल जाती है। 'मंगलसूत्र' प्रेमचंद का अंतिम अपूर्ण उपन्यास है। इसके चार परिच्छेद ही लिखे जा सके थे कि उपन्यासकार का देहावसान हो गया। उनकी मृत्यु के कई वर्ष के उपरांत यह अधूरा उपन्यास प्रकाशित हुआ। 'मंगलसूत्र' प्रेमचंद की अंतिम अधूरी रचना थी। केवल 70 पृष्ठों से यह अनुमान नही लगाया जा सकता कि प्रेमचंद अपने किन मनोभावों को इसमें व्यक्त करना चाहते है, जिन दिनों इस उपन्यास का प्रारंभ हुआ, उन दिनों उनकी आर्थिक दशा बहुत नाजुक थी। संभवतः 'मंगलसूत्र' प्रेमचंद की आत्मकथा होती, ऐसा अनुमान किया जाता है।

सारांश- प्रेमचन्द का एक अन्य रूप पत्रकार का भी है। हिन्दी पत्रकारिता को उनकी देन महत्वपूर्ण तथा उल्लेखनीय है। जो पत्रकारिता से उनका परिचय तो तभी हो गया था, जब वे उर्दु के प्रसिद्ध नामिक पत्र 'जमाना' में नियमित रूप से लिखने लगे थे। जब महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन से प्रभावित होकर प्रेमचन्द ने अपनी पुरानी सरकारी नौकरी को लात मार दी, तब उनके मन में पत्रकार बनकर जीवन-यापन करने का विचार आया था। वे कुछ काल तक साप्ताहिक 'जमाना' और साप्ताहिक 'आजाद' के अवैतनिक सहायक सम्पादक भी रहे थे।

प्रेमचन्द का सबसे वृहद उपन्यास है। इसमें हिन्दु, मुसलमान और उस समाज के जीवन चित्र प्रस्तुत किये गये है। 'रंगभूमि' में भारतीय जीवन के अनेक चरित्रों पर दृष्टिपात किया गया है। 'रंगभूमि' में भारतीय समाज के सभी वर्गों के प्रतिनिधित्व करने वाले पात्र आए है। वर्ग की दृष्टि से इसमें उच्च, मध्य और निम्न वर्ग के पात्र आए है। धर्म की दृष्टि से हिन्दु और मुसलमानों के अतिरिक्त ईसाई पात्र भी संयोजित किए गए है। उपन्यास के प्रधान-चरित्रों के अतिरिक्त सामान्य पात्रों को संजीवता प्रदान करने की कला में प्रेमचंद की उपन्यास कला का सुन्दर विकास हुआ है। यह प्रेमचंद की पहली औपन्यासिक कृति है, जिसमें सामाजिक समस्याओं की अपेक्षा व्यक्ति की समस्या प्रमुख है। रमानाथ का मित्या प्रदर्शन और जालपा का आयोजन प्रेम उपन्यास की कथा के संविधान का विशेष आधार है। व्यक्ति के संस्कार निर्माण में वातावरण का अमिट प्रभाव दिखाकर उपन्यासकार ने चिरसत्य की प्रतिष्ठा की है। 'गबन' की पात्रदृष्टि कलात्मक है। इसमें आदर्शवादी पात्रों की निर्वाव चरित्रों के विपरीत यथार्थवादी पात्रों के सजीव चरित्रों की योजना की गई है। इसके पात्र हमारे जीवन में अधिकाधिक संबंधित है और उनके चरित्र निर्माण में वातावरण एवं परिस्थितियों का व्यापक प्रभाव अंकित किया गया है।

'कर्मभूमि' (1932) में प्रेमचंद ने बड़े व्यापकतत्व के साथ उन राजनीतिक, आर्थिक, समाजिक और धार्मिक प्रवृत्तियों का चित्रण किया है जो पग-पग पर भारतीय समाज और जीवन को प्रभावित कर रही थी। कर्मभूमि में पुरुषपात्रों की अपेक्षा स्त्रीपात्रों का चरित्रांकत अधिक प्रभावात्मक है। कर्मक्षेत्र में भी नारी पात्र पुरूष पात्रों में बाजी मार ले जाते है। सुखदा के अतिरिक्त पठानिन सलोनी नैना, रेणुका आदि स्त्रीपात्रों का चरित्राकंन सजीव हुआ है।

'गोदान' (1936) प्रेमचंद का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। इससे भारतीय समाज के बहुत बड़े भाग को कथावस्तु का विषय बनाया गया है। उपन्यास का ध्येय ग्रामीण समाज का चित्रण करना है। यह पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव में आन्दोलित नागरिक संस्कृति दशा से भी पाठक का परिचय कराती है। 'गोदान' में उच्च, मध्य और निम्न वर्ग के पात्र आये है। उच्च वर्ग में खन्ना जैसे पूँजीपति और रायसाहब जैसे जमींदार हैं, मध्यवर्ग में मेहता मालती और ओंकारनाथ आदि है। निम्नवर्ग में होरी, ग्रोबर, सिलिया, शोभा हीरा भूरे आदि व्यक्ति आते है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से 'गोदान' के पात्रों के दो स्पष्ट वर्ग है शोषक - शोषित। प्रथमवर्ग जमीदार पूंजीपति और महाजन हैं। शोषित वर्ग में गांव के किसान और नगर के श्रमजीवी हैं। इन पात्रों की चरित्रत प्रवृत्तियों के अतिरिक्त इनके मानसिक गठन की अच्छी झाँकी भी मिल जाती है। 'मंगलसूत्र' प्रेमचंद का अंतिम अपूर्ण उपन्यास है। इसके चार परिच्छेद ही लिखे जा सके थे कि उपन्यासकार का देहावसान हो गया। उनकी मृत्यु के कई वर्ष के उपरांत यह अधूरा उपन्यास प्रकाशित हुआ। 'मंगलसूत्र' प्रेमचंद की अंतिम अधूरी रचना थी। केवल 70 पृष्ठों से यह अनुमान नही लगाया जा सकता कि प्रेमचंद अपने किन मनोभावों को इसमें व्यक्त करना चाहते है, जिन दिनों इस उपन्यास का प्रारंभ हुआ, उन दिनों उनकी आर्थिक दशा बहुत नाजुक थी। संभवतः 'मंगलसूत्र' प्रेमचंद की आत्मकथा होती, ऐसा अनुमान किया जाता है।

सारांश- प्रेमचन्द का एक अन्य रूप पत्रकार का भी है। हिन्दी पत्रकारिता को उनकी देन महत्वपूर्ण तथा उल्लेखनीय है। जो पत्रकारिता से उनका परिचय तो तभी हो गया था, जब वे उर्दु के प्रसिद्ध नामिक पत्र 'जमाना' में नियमित रूप से लिखने लगे थे। जब महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन से प्रभावित होकर प्रेमचन्द ने अपनी पुरानी सरकारी नौकरी को लात मार दी, तब उनके मन में पत्रकार बनकर जीवन-यापन करने का विचार आया था। वे कुछ काल तक साप्ताहिक 'जमाना' और साप्ताहिक 'आजाद' के अवैतनिक सहायक सम्पादक भी रहे थे।